ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

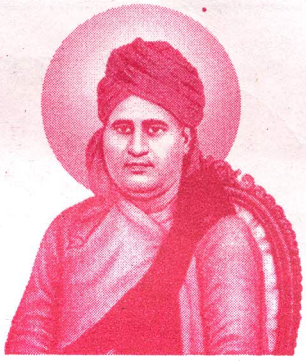

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्त्तें वर्त्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःखसागर में डुबा दिया है।

इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं, परन्तु 'सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवमानः' अर्थात् सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इस के निवासी आर्य हैं।
विद्या, कला–कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े।
पर चिन्ह उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य वन्दना कोष से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज मण्डी के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : १०६वां विक्रमी सम्वत् २०७३ सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११७ जून २०१६

कृणवन्तो विश्वमार्यन

आर्य समाज लोअर बाजार, शिमला

का 134वां वार्षिक उत्सव

दिनांक 5 जून 12 जून 2016 तक धूमधाम से मनाया जाऐगा।

समारोह में आर्य जगत् के मूर्धन्य प्रख्यात् वैदिक प्रवक्ता स्वामी शिवानंद जी, नोयडा दिल्ली, आचार्य रामानन्द, वैदिक प्रवक्ता शिमला, आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० सुखपाल आर्य उत्तर प्रदेश व पं० अरूण जालंधर, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, अपने मधुर संगीत एवं वेद कथा द्वारा वैदिक सिद्धांतों का प्रचार करेंगे। इस वार्षिकोत्सव में बहुत से राजनैतिक नेताओं, आर्य सन्यासी महात्माओं व वैदिक विद्वानों को भी आमन्त्रित किया गया है।

समारोह के मुख्य आकर्षण

ऋग्वेद परायण महायज्ञ	: ५ जून से १२ जून तक प्रातः ७.३० से ६.३० बजे तक
ब्रह्म	: आचार्य रामान्द
पुरोहति	: रवीन्द्र शास्त्री
वेद पाठी	: आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला की छात्राएं
भजन एवं वेदोपदेश	: प्रातः ६.३० से प्रातः १०.३० बजे (५ से १२ जून)
शोभा यात्रा	: २.३० से सांय ५.३० बजे तक १० जून, शुक्रवार
महिला सम्मेलन	: २.३० से सांय ५.३० बजे तक ११ जून, शनिवार
आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला का पारितोषिक वितरण समारोह व वैदिक सम्मेलन	: १२ जून सांय २.३० बजे से ५.३० बजे तक, रविवार

विशेष :ऋग्वेद पारायण यज्ञ महायज्ञ की पूर्णाहूति दिनांक १२ जून को प्रातः ६.०० बजे होगी तथा ५ जून से १२ जून २०१६ तक भजन एवं वेद कथा ६.०० बजे से १२.०० बजे तक प्रतिदिन होगी। १० जून २०१६ से १२ जून २०१५ तक रात्रिकालीन भजन संध्या ७.३० से ६.३० बजे तक होगी।

मुख्य उत्सव : १० से १२ जून तक होगा। अतः बाहर से आने वावे अतिथि ६ जून शाम को पहुंच जाएं व आने की सूचना पहले दे दें।

आप सभी से विनम्र प्रार्थना है कि आर्य समाज लोअर बाजार शिमला के १३४वें ऐतिहासिक वार्षिक उत्सव में सपरिवार उपस्थित होकर इसकी सफलता के लिए तन–मन–धन से अपना सहयोग समर्पित कर पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ में यजमान बनने के लिए पुरोहित जी से सम्पर्क करें। दूरभाष सम्पर्क : ०१७७–२८०७१२२, ९८१६१–२८८५३

निवेदक : प्रबन्धक समिति, आर्य महिला समाज एवं श्री हृदयेश आर्य, महामन्त्री, आर्य समाज शिमला

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332
	2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर खाता, लोअर बाजार, शिमला
	2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

आर्य समाज के प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में पैदा हुए थे। वे जन्म से ही अद्भुत प्रतिभा के बालक थे। उन्हें शिवरात्रि के दिन आधीरात जब चूहों को शिव मूर्ति पर चढ़े हुए खाद्य पदार्थों को खाते और इधर उधर दौड़ते देखा तो ऋषिवर दयानन्द जिनका बचपन का नाम मूल शंकर था का मोह भंग हो गया और वे रात्रि के निवड़ अंधकार में शिव मन्दिर से घर वापिस आ गए और अपनी माता जी से खाने के लिए कुछ मांगा। मूलशंकर की माता ने अपने बेटे को भोजन देते हुए कहा कि मैंने तुम्हें पहले ही व्रत न रखने को कहा था लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। ऋषिवर दयानन्द अपने माँ–बाप के सबसे श्रेष्ठ बालक थे। स्वामी जी के जन्म स्थान टंकारा से जिस खिड़की से छलांग लगाकर घर बार छोड़ने का संकल्प लेकर बालक मूलशंकर सदा व सर्वदा के लिए यह कहकर चले गए कि मैं अब दूसरी बार कभी नही आऊंगा।

पूर्ण वैराग्य स्वामी जी की नस–नस में छा चुका था वे अपनी धुन के सच्चे पक्के व्यक्ति थे। सिद्धपुर के मेले में एक साधु से स्वामी जी के होने की बात सुनकर उनके पिता श्री उनको लाने के लिए सिपाहियों सहित सिद्धपुर पहुँचे और साधुओं की पक्तियों में अपने बटे मूलशंकर को बैठा देखकर उन्हें क्रोध आया और उन्होंने बालक मूलशंकर के कपड़े फाड दिए। मूलशंकर ने भी अपने पिता जी के साथ घर जाने की बात कही और अपने व्यवहार के लिए क्षमा याचना की। स्वामी जी अर्धरात्रि में शौच का बहाना करके बाहर निकल गए और रास्ते में एक वृक्ष पर बैठकर अंधेरा छिटकने की प्रतीक्षा करने लगे। सिपाही भी स्वामी जी को ढुंढने आए लेकिन उनके हाथ में कुछ भी न लगा।

ये ऋषिवर दयानन्द का अपने पिता से अन्तिम मिलन था। इसके बाद वे कभी भी पिता–पुत्र का मिलन न हुआ। देव ने लगभग पौने तीन साल मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द के चरणों में रहकर सर्म्पूक वेद शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की। वे गुरूवर के चरणों को स्पर्श करते हुए एक दिन प्रस्थान करने हेतु कुछ लौंग लेकर गुरू चरणों में आए। गुरूवर विरजानन्द ने अपने प्रिय होनहार शिष्य को डांटते हुए कहा कि मुझे इन लौंगों की आवश्यकता नहीं है। मैं तो दयानन्द दक्षिणा के रूप में तुम्हें ही चाहता हूँ। शिष्य ने हाथ जोड़ते हुए कहा कि मेरे पास जो कुछ था सब आपका ही है। यह भटकता हुआ शिष्य आपके चरण शरण में रहकर जो कुछ सीख पाया है उसका समस्त श्रेय आपको ही जाता है आप जो मांगोगे मैं दक्षिणा के रूप में दे दूंगा। इस पर प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द सरस्वती जी ने कहा कि दयानन्द जाओ भारत के कोने–कोने में धर्मान्धता के बादल छाए हुए है। वैदिक धर्म लोप हो चुका है तुम उसका प्रचार–प्रसार करो व भारत को कोने–कोने में वेदों का डंका बजाओ। शिष्य दयानन्द ने गुरु की आज्ञा को शिरोधार करते हुए कहा कि मैं आपकी आज्ञा व शिक्षा का पालन करूंगा और किसी भी परिस्थिति में गुरूवचनों को भंग नहीं होने दूंगा। स्वामी जी प्रारम्भ में आगरा जयपुर, उदयपुर आदि स्थानों में जाते रहे जब कभी भी उन्हें कोई शंका होती थी तो उसका समाधान करने के लिए पुनः गुरू चरणों में आ जाया करते थे। ऋषिवर दयानन्द दया, धर्म, सत्य व अहिंसा की मूर्ति वे किसी भी परिस्थिति में झूठ, छल व कपट से समझौता नहीं करते थे और सबको सादा व सच्चा जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते थे। स्वामी जी के शिष्यों ने आर्य समाज के एक सत्संग में एक महात्मा जी ने बड़े रोचक शब्दों में एक व्यक्ति की झूठ बोलने की कथा इस प्रकार सुनाई–एक दोस्त जो अपने घोड़ी से बड़ा प्रेम करता था को तीर्थ स्थान की यात्रा करने की प्रबल इच्छा सवार हुई। उसने अपने एक मित्र को घोड़ी संभालते हुए कहा कि मेरे आने तक तुम इसकी देखभाल करें। आकर मैं इसे ले लूंगा। दूसरा मित्र बोला तुम निश्चिंत होकर यात्रा करो मेरे होते हुए घोड़ी को कोई भी और किसी प्रकार का कष्ट नहीं आएगा। मैं अपनी जान से अधिक प्यार इससे करता हूँ तुम्हारी अनुपस्थिति में इसका पालन पोषण मेरा दायित्व बनता है। वह व्यक्ति घोड़ी को मित्र के पास छोड़कर तीर्थ यात्रा की ओर चल पड़ा। इधर घोड़ी का रूप रंग व ढंग देखकर हर व्यक्ति उस घोड़ी पर आकर्षित हो जाता था व उसे खरीदना चाहता था। एक दिन उसके एक मित्र के आग्रह करने पर उसने घोड़ी को ११०० रुपये में बेच दिया। कुछ दिनों बाद उसका मित्र तीर्थ यात्रा से घर आया और उसने कहा अब मुझे मेरी घोड़ी बताओ कहां है बहुत दिनों बाद आया हूँ, दर्शन करना चाहता हूँ वह व्यक्ति खामोश हो गया और उससे कुछ न कहा। मित्र के बहुत आग्रह करने पर कहा कि दोस्त तुम्हारी घोड़ी एक दिन अचानक विचार हो गई। मैं डा., वैद्य बुलाने पर मैं तुम्हारी घोड़ी न बचा सका और वह हम सबको छोड़कर सदा के लिए चल वसी। उसके मित्र ने कहा जीवन मरण हमारे व तुम्हारे वश में नही है। वस मुझे यह बता दो कि तुमने उसे कहा दवाया। ताकि मैं उसके नश्वर शरीर को ही देख सकूं। मित्र ने एक स्थान को दर्शाते हुए कहा कि हमने मिलकर उसे दबाया। उस व्यक्ति ने उस स्थान को खोदना शुरू किया व थोड़ी देर बाद उसके नीचे से उसे सींग दिखाई दिए

उसने अपने मित्र को कहा कि यहाँ घोड़ी नही अपितु किसी बैल को गाड़ा गया है तुम झूठ बोल रहे हो। वह व्यक्ति बोला मुझे झूठ बोलने कि क्या आवश्यकता है। उसे किसी बिमारी से प्राण त्यागने पड़े। उन्होंने मिट्टी से पुनः शव को ढक दिया और वापिस घर आ गए एक झूठ लाने के लिए आदमी को अनेकों झूठ बोलने पड़ते है। यही दशा उस घोड़ी के स्वामी के दोस्त की हुई वह ठीक–ठीक उत्तर नहीं दे पाया और कालान्तर में इस नश्वर शरीर को छोड़कर चल बसा। ईश्वर के दरबार में अपने सुकर्मों व कुकर्मों का ब्यौरा मनुष्य को देना ही पड़ता है। क्योंकि धर्मराज की यातनाओं से वह इतना घबराया कि उसने अगले वीक में कोई और किसी प्रकार का पाप न करने का प्रण किया। लेकिन अब क्या हो सकता था। अपने पापों का दण्ड तो उसे भोगना ही पड़ा। व्यक्ति को कभी व किसी परिस्थिति में स्वार्थी व दम्भी नहीं बनना चाहिए। सुकर्मों की खेती करते रेहना चाहिए। इसी सम्बंध में कबीर दास जी ने ठीक ही कहा है।

मानष जन्म दुर्लभ है होए न बारमवार
जिमि बल फल पाखे भू य गिरे नहीं लागे डाल

मनुष्य जीवन में जो अपने व्यक्ति पल–पल और क्षण–क्षण में बुरे काम नहीं करता है वही प्रभु का वास्तविक भगत है। आर्य समाज के प्रर्वतक महान समाज सुधारक तथा विश्व में वेदों का डंका बजाने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने तर्क की तलवार से अंधविश्वासों का हनन व खण्डन किया उन्होंने हरिद्वार में हो कुम्भ मेले में पाखण्ड के खण्डन की पताका लहराकर वेदों उपनिषदों व शास्त्रों का सहारा लेकर अनार्ष ग्रंथों का खण्डन किया। स्वामी जी ने जीवन की अन्तिम सांस तक अपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी द्वारा बताई हुई शिक्षाओं का पालन किया तथा जगह–जगह जाकर आर्य समाज का प्रचार व प्रसार किया। महर्षि दयानन्द कभी भी किसी भी परिस्थिति में किसी को दुखी नहीं देखना चाहते थे लेकिन वे सत्य मार्ग पर चलते हुए आगे बढ़ते रहे और इसी को उन्होंने जीवन का धर्म, कर्म व मर्म माना। आर्य समाज के १० नियमों में स्वामी दयानन्द आर्य समाज के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि संसार का उपकार करना धर्म है। अर्थात् शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति करना। स्वामी जी वेदों के पक्षधर थे। उनसे जब किसी ने पूछा कि स्वामी जी आप गंगा को क्या मानते है उन्होंने तुरन्त कहा कि जो आप मानते है वही मैं मानता हूँ पर सच–सच बोलो कि तुम क्या मानते हो ? वह बोला मैं तो पानी मानता हूँ, पहचानता हूँ। इस पर स्वामी जी ने कहा मैं भी यही मानता हूँ। दूसरे व्यक्ति ने उनसे पूछा स्वामी जी आपके लिए गंगा कितनी है उन्होंने कमण्डल उठाते हुए कहा बस मेरे लिए इतनी है। अर्थात् मात्र इतने जल से मेरी प्यास शांत हो जाती है। हड्डियों के बारे में सत्यार्थ प्रकाश में विशेष प्रकार से स्वामी जी ने पाखण्डों का खण्डन किया है। स्वामी जी यह जानते, मानते व पहचानते थे कि हमें मन वचन व कर्म से किसी को दुखी नहीं करना चाहिए। सभी के लिए हितचिन्तन जीवन के अंतिम सांस तक करते रहना चाहिए। उन्होंने जाति जाति का वर्णन करते हुए कह अपने गुण, कर्म व स्वभाव के कारण मनुष्य एक जाति है, उसी प्रकार पशु पक्षियों की जाति भी है। स्वामी जी ने कहा किसी को नीच नहीं समझना चाहिए। हम सभी का निर्माण पिता परमेश्वर ने हड्डी और माँस की ईष्ट व गारे लगाकर किया है। फिर हम अपने आपको में सर्वश्रेष्ठ क्यों समझे। सर्वश्रेष्ठ वही है जो सर्वश्रेष्ठ कर्म करे और आचरण सराहनीय व वेदानुकूल होता है। धर्म के अनुसार धर्म का सबसे बड़ा मर्म परहित सेवा करना ही है इस सम्बंध में कवि तुलसीदास ने कहा :–

परहित सरस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नही अधमाई

अर्थात् दूसरों का भला चाहने से बड़ा कोई धर्म नही है और दूसरों को नीचा समझना व नीचा दिखाने से बड़ा कोई पाप नहीं है। अंत ने व्यास जी लिखते है :–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम
परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीडनम्।

अर्थात् मन, वचन व कर्म से दूसरों का हित करने से बड़ा कोई पुण्य नही है और अपने दुष्वचनों से किसी के ह्रदय को विदरक करने से बड़ा कोई पाप नहीं है। अतः वेदों के अनुसार और ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं का पालन करते हुए हमें मन, वचन व कर्म से यर्थायवादी बनकर दूसरों की पीड़ा को हरते रहना चाहिए परमात्मा के इस ब्रह्ममाण्ड रूपी रचना को देखकर देवस्य पश्च काव्यम की बात को चरितार्थ करते रहना चाहिए। जीवन में हम संकल्प ले और पृथ्वी में सुविचारों को बोए और कुविचारों के कष्टों से दूर रहकर अपने जीवन को प्रशस्त करें। यही जीवन क कर्म, धर्म व मर्म है इसे नही भूलना चाहिए अपितु इस पर जीवन की अंतिम सांस तक चलने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी हम मैथलीशरण गुप्त जी की बात को चरितार्थ कर सकेंगे।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती
भगवान भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती

सन्त कबीर दास जी ने भी यह कहा है :–

कबीरा सोही पीर है जो जाने पर पीर
जो पर पीर न जानी है वे काफिर वे पीर।

प्रिय ऋषि का स्मृति दिवस सुखपूर्वक सम्पन्न

♦आचार्य महाबीर सिंह, दयानन्द मठ, चम्बा

प्रिय ऋषि "संस्था की उन्नति व समृद्वि के लिए बहुत से कामों को जल्दी–जल्दी आरभ्भ करते हुए आगे बढ रहे थे। मानों उसे ज्ञात था कि मैंने अधिक दिन इस संसार में नहीं रहनस हैं। मेरे पास समय बहुत थोड़ा हैं। संस्था के प्रति मेरे बहुत उत्तर दायित्व हैं राष्ट्र के विषय में समाज के विषय में पूज्य स्वामी जी ने मेरे से बहुत सी आशाऐं संजो रखी हैं। विशषकर ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दर्शनानन्द, पं. लेखराम जी स्वनामधन्य गुरुदत्त विद्यार्थी, त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज फील्डमार्शल स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी महाराज आदि। महामनाओं के द्वारा सींचा व विकसित किये गए, संसार को वेदिक विचार धारा की रोशनी से जगमगाने वाले गिरि गह्वरों तक सिमटे अज्ञानान्धकार को दूर भगा कर ज्ञान ज्योति से प्रकाश्ति करने वाले आर्यसमाज की वर्तमान अधोगति को रोकने के लिए मेरे को वह बड़ी ही आस्था से व विश्वासपूर्वक घडने में लगे हैं। उनके उस प्रयास को पूरा करने के लिए सबसे पहले इस मूल संस्था का मठ का आत्मनिर्भरहोना आवश्यक हैं। इसी दिशा में कार्य कर रहें थें। योजनाएं बना रहे थे और उन्हें अंजाम देने में तत्परता दिखा रहे थें। सूर्य जब दक्षिणायन में होता हैं तो दिन छोटे बहुत छोटे हो जाते हैं। मनुष्य अभी कार्य पूरा भी नहीं कर पाते कि सांझ आ जाती हैं और शीघ्र ही गहन अंधकार प्रकृति को अपने आगोश में ले लेती हैं। चारो ओर निस्तब्धता छा जाती हैं। प्रिय ऋषि के द्वारा जल्दी–जल्दी किए जा रहे अधूरे कार्यों के बीच में ही सांझ उपस्थित हो जाती। उसके द्वारा किए जा रहें कार्यो की गति रुक जाती हैं। सारी हलचल बन्द हो जाती हैं। चारो ओर सन्नाटा सा छा जाता हैं। विदुर जी कहते :–

शष्णीव विचिन्वन्तं अन्यत्र गतमानसम्।
वृकीवोरणमासाय मृत्यु रादार्पणच्छति।।

घास चरने में मगन मौत निकट दर निकट आती जा रही हैं इससे सर्वथा अन्जान.भेड़ को जैसे व्याघ्री (वाघिन) अचानक आकर ले जाती हैं। वैसे ही अपने कामों में मग्न मनुष्य को भी अचानक ही मौत आती हैं और अपने साथ ले जाती हैं इसके कितने काम शेष हैं। इससे क्या–क्या आशाऐं लगाई गई हैं। इन सब की प्रवाह किए बिना निष्ठुर भाव से ले जाती हैं। कार्यो की व्यगुता में खोए मन में अनेको योजनाओं को समेटे प्रिय ऋषि को गत वर्ष २४–५–२०१५ को रविवार प्रातः २ बजे मौत आई ओर अपने साथ ले गई। बिमार होते हुए भी अपनी आशाओं के केन्द्र ऋषि के सहारे निज कष्टों बिमारी की पीड़ाओं को भुला जीने की ललक लिए स्वामी जी महाराज सहसा ही घटित इस घटना से स्तब्ध रह गए उनके सामने ही उनका स्वपनो का महल भरभरा कर भूमिसात हो गया।अब जीने की तमन्ना समाप्त हो गई। बेटी चेतना ने जब ये समाचार स्वामी जी को सुनाया तो जैसे थका हारा पथिक निढाल हो कर बैठ जाता हैं वैसे ही स्वामी जी भी इस घटना के विषय मे सुनते ही चलो अच्छा हुआ कहते हुए निश्चेष्ट अपने बिस्तर पर लेट गए। उनकी आखें ऊपर की और टकटकी लगाए स्थिर हो गई मानो अपने धराशायी होते महल के धुएं को देख रहे हो। उसके बाद स्वामी जी महाराज "जातस्यहि ध्रुवो मृत्युः ध्रवम् जन्म मृतस्य च" श्री कृष्णजी महाराज गीता में कहते हे, जो इस संसार में आया है उसका जाना निश्चित हैं। अर्थात जो पैदा हुआ हैं उसकी मृत्यु निश्चित हैं। जितने समय के लिए परम पिता परमात्मा ने उसे इस संसार में भेजा हैं उस समय को पूरा करने के बाद उसने जाना ही हैं। उससे सम्बन्धित लोग रोए चाहे चिलाए इससे कुछ नहीं होता जाने वाला फिर लौट कर नहीं आता। श्री कृष्ण जी युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं :

स्वप्नलब्धा यथा लाभा वितथाः प्रतिवोधने।
नहिते सुलभामूयो ए हतास्मिन रणाजिरे।।

हे युधिष्ठिर जैसे स्वप्न में प्राप्त लाभ यानि धन दौलत् महल अंटालिकायें अपार वैभव आदि जागने पर मिथ्या हो जाते है, झूठे हो जाते हैं वैसे ही हमारे सामने हंसने खेलने वाले लोग जो इस संसार रुपी रणांगण में मारे गए हैं मृत्यु के मुँह में चले गए हैं। वे पुनः हमारे सामने नहीं आएंगे। उनका हंसना, खेलना, भागना, दौड़ना, रुठना, मनाना सब स्वप्नवत हो गए हैं। प्रिय ऋषि के द्वारा हमारे सामने किए जाने वाले सभी क्रियाकलाप भी स्वपन्वत हो गए हैं। स्मृतियां ही हृदय पटल पर शेष रह गई हैं, उन्हीं के सहारे हमने जीना हैं। २४–५–२०१६ को हमारे उस स्वप्न को पूरा एक साल हो गया है। उस दिन स्मृति दिवस के रूप में हमने उस दिवस को मनाया। उस स्वपन के द्रष्टा उसके साक्षी उससे संम्बन्धित सभी आत्मीय जनो ने सभी संवेदनशील सहृदय जनों ने मिलकर भावविभोर कर देने वाले, टूट कर बिखरने से आहत मर्माहत सभी लोगों ने उसे याद किया। उसकी कृतियों को स्मरण किया। उसकी सरल शालीनता वाले स्वभाव को याद किया। यद्यपि सभी के हृदयों में उसकी अमिट छाप बनी हुई हैं। पग–पग पर उसे याद करते रहते हैं। पर समिलित रुप से स्मृतियों को सांझा करने का यह अवसर था। उसकी दया, उदारता, विनम्रता,

सौम्यता आदि गुणों को सभी ने मिलकर याद किया। आदर्श विद्यालय के छात्रों ने, स्टाफ ने अपने साथ उनके मधुर सम्बन्धों को विद्यार्थियों, कर्मचारियों व पूरे अध्यापक वर्ग की उन्नति के लिए किए जा रहे उनके प्रयासों, उनके द्वारा दिए गए प्रोत्साहनों,उत्साहवर्धनों को सजल आंखों से याद किया। उनके चरणों में कृतज्ञता से प्रपूरित हृदय से अपना आभार व्यक्त किया। अपनी लड़खड़ाती वाणी से निकले उनकी प्रशस्ति के वचनों को बिखेरा। दीनानगर से स्वामी सदानन्द जी भी आए थें। संस्था को लड़खड़ाने नहीं देगें इस आशय का वक्तव्य उन्होंने दिया। पूज्य स्वामी आर्यवेश जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी भी आए थें। ऋषि उनका चहेता व बहुत प्यारा बच्चा था। श्री दीक्षेन्द्र ब्रहमचारी का वह अभिन्न सखा था। उन्हें भी इसके जाने से भारी व्यथा हुई थी। वे भी इस व्यथा को सांझा करने,स्मृतियों को सांझा करने आए थें। श्री जगत वर्मा जी, श्री रामानन्दजी, अन्य कई लोग इस स्मृति दिवस पर पधारे सभी ने मिलकर इस दिवंगत आत्मा को याद किया। और उसकी भावनाओं के अनुरुप कार्य आगे जारी रखने की वचन बद्धता जताई।

जीवन गुजर न जाए कहीं हाथ मलते मलते
कही बंद हो न जाए यह स्वास चलते चलते

भजन द्वारा जीवन में समय रहते कुछ अच्छे कार्य कर लेने चाहिए। न जाने किस घड़ी यह स्वासों की डोर बंद हो जाए का संदेश जनता जनार्दन को दिया गया। इक झोली में फूल खिले इक झोली में कांटे कोई कारण होगा भजन के द्वारा मनुष्य को भला–बुरा, हानि–लाभ, उन्नति–अवन्नति, खुशी–गमी सब अपने ही कर्मों के कारण प्राप्त होते हैं। किसी को खुश व सुखी देखकर उससे इर्शा द्वेश न करके अपितु उसी प्रकार के कर्म करने का प्रयास करना चाहिए जिससे सुख व शांति उपजति हैं और अपार खुशी प्राप्त होती हैं। इन दोनो भजनों के द्वारा विद्यालय की संगीत की अध्यापिका के साथ मिलकर विद्यालय के बच्चों ने उपस्थित सभी लोगों को यह संदेश दिया जिसे सुनकर सभी लोग सोचने के लिए मजबूर हो गए। श्री जगत वर्मा जी ने ओम् जपो मेरे भाई ओम् जपो मेरी बहना भजन सुना कर सत्कर्मो में प्रेरित होने के लिए, जीवन में सुख व शंति प्राप्त करने के लिए ओम् नाम का जप, ओम् नाम का स्मरण करने के लिए प्रेरित किया। तथा अपनी आदत ऐसी बनाओ कि अंतिम समय में भी जब संसार से जाने लगो तो मुंह से हाय तौबा की जगह ओम् नाम ही निकले। यह संदेश दिया। दीनानगर से स्वामी सदानन्द जी के साथ इस स्मृति दिवस में सम्मिलित होने के लिए आए जितेद्र प्रभु ने भी संसार की असारता विषयक भजन सुनाकर सभी को ईश्वर का स्मरण करने के लिए कहा। आचार्य महाबीर सिंह यानि मैंने भी बीच–बीच में श्री ऋषि के संस्मणों को सुनाकर उससे विद्यार्थीवर्ग, व नवयुवक वर्ग को शिक्षा लेने के लिए व, बड़ो का आदर सम्मान करना सीखना चाहिए यह उद्बोधन दिया। साथ ही कहा कि कुछ लोग इसे श्राद्ध का नाम देकर पाखंड बता रहे हैं। पौराणिकता का प्रसार कह रहे हैं। पर यह सब गलत हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी कहते हैं, कि अन्तेष्टि के बाद दिवंगत आत्मा के प्रति आत्मीय जनों का कोई कर्तव्य शेष नहीं रहता पर हां यज्ञ,दान व अन्य पुण्य कर्म के द्वारा उस आत्मा को याद करते हैं, तो उसमें कोई हानि नहीं : महाभारत में आया हैं :–

यज्ञो, दानमध्ययनं तपश्च चत्वार्येतान्यन्वेतानि सदभिः

यज्ञ, दान स्वाध्याय और तप यानि श्रमं इन चारों का अनुसर सज्जन लोग करते हैं। अथवा सजनों कों अवश्य करना चाहिए। गीता में श्री कृष्ण जी भी कहते है :

यज्ञ दान तपः कर्म नत्याज्यम् कार्यमेवतत्
यज्ञों दान तपश्चैव पावमानि मनीषिणाम्।

यज्ञ दान और तप इनका त्याग कभी नहीं करना चाहिए। इन्हें करते रहना चाहिए। क्योंकि यह तीनों ही मनुष्य को पवित्र करने वाले हैं। भवसागर से पार कराने वाले हैं। इन कर्मों को किसी न किसी बहाने से, निमित्त से बड़े स्तर पर करना चाहिए। जिससे अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले, शिक्षा मिलें, और वे भी इन कर्मो को अपनाऐं जिनसे उनका भी कल्याण हो। हमने इस दिवस को यह रुप दिया यानि यज्ञ सत्संग लंगर के द्वारा मनाया स्मरण किया तो का भयो हानि अगर यही श्राद्ध हैं तो यह श्राद्ध होते रहने चाहिए। अगर यही पौराणिकता हैं, तो यह पौराणिकताखूब फैलनी चाहिए। अगर इन कार्यो से आर्य समाज के संस्थान पाखण्ड के अड्डे कहलाएगें, तो यह अड्डे और भी अधिक होने चाहिए। हम इस दिशा की और आगे बढ़ रहे हैं। प्रिय ऋषि को लक्ष्य कर एक दिन का कार्यक्रम किया। ३, ४, ५ अगस्त को पूज्य स्वामी महाराज के स्मृति दिवस के रुप में तीन दिनों का कार्यक्रम करेगें। और उसके बाद ऋग्वेद में वर्णित पूज्य स्वामी जी महाराज का प्रिय कर्म दुर्लभ शारद यज्ञ मे भी यह प्रक्रिया दोहराई जाएगी। जिन शौभाग्यशालीयों को यह सब कार्यक्रम अच्छे लगे, रुचिकर लगे, वे इन कार्यक्रमों में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें। साथ ही पूज्य स्वामी जी महाराज के चरणों में अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करें। जिन लोगों को यह कार्यक्रम अच्छे न लगे यह उनका अपना विषय हैं। अपना स्वभाव अपनी वृति है। पूज्य स्वामी जी महाराज ने हमारी वृति हमारा स्वभाव जिस प्रकार से बना दिया हैं उससे हम अलग कैसे हो सकते हैं।

श्री कृष्ण जी महाराज ने गीता में लिखा हैं :

यज्ञे तपसी दाने च स्थिति सदित्योच्यते
क्रर्मचैव तदर्थीयं सदित्येवामिधीयतें

यानि–यज्ञ, दान, तप में जिनका मन लगता है। इन कर्मो को करने में जो तत्पर रहते हैं उनकी वृति को सद्वृति कहते हैं। इन तीनों कर्मो को करने के लिए जो कर्म किया जाता हैं या किए जाते हैं उन्हें सतकर्म कहते हैं। इसलिए आओ इन कर्मो में रुचि रखने वाले हम सभी लोग अपनी वृति को सद्वृति बनाने का प्रयास करे। हम लागों ने अपने कर्मो को सत्कर्म बनाना हैं इसी के लिए हमारा यह प्रयास हैं। ईश्वर सबका कल्याण करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई

अभिनन्दन-पत्रम्

मान्यवर, परम धारा के अविरल स्त्रोत श्रद्धेय अभिमन्यु कुमार खुल्लर जी का जन्म ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में श्रद्धेय पिता स्व. श्री बृजलाल खुल्लर व माता स्वर्गीय रामरखी खुल्लर के घर ११ दिसम्बर १६३६ को हुआ। बचपन से ही अपनी अद्वितीय जिज्ञासु मेधा शक्ति के कारण आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के आदर्शो से प्रभावित होकर आर्य समाज के सम्पर्क में आये।

आप वरिष्ठ लेखाधिकारी केन्द्र सरकार ग्वालियर मध्य प्रदेश के पद से सेवानिवृत्त होकर अपना जीवन पूर्ण रुपेण आर्य समाज की सेवा में लगा दिया है। आप अपनी वाणी के द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में व्यस्त रहने के साथ–साथ आपने हिन्दी में रचनाएँ भी की है। आपने अपनी रचनाओं एवं लेखों के माध्यम से नवीन पीढ़ी को महर्षि दयानन्द के युगान्तकारी, सम्मोहक, व्यक्तित्व व सर्वकालीन स्थायी आभा व ऊर्जा प्रसारित करने वाले कृतित्व से परिचित कराना चाहते है। आपने अपनी रचनाओं से वैदिक धर्म के गौरव को सर्वथा सुरक्षित रखने का सराहनीय प्रयास कर रहे हैं।

आप की रचनाओं में ऋषि अर्पण मुख्य रचना है। इसके अतिरिक्त आपके लेख अनेक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। आपका लेखन कार्य 'बागी फकीर' से प्रारम्भ हुआ। यह लेख ग्वालियर के प्रतिष्ठित 'दैनिक नवभारत' में सन् २००२ में प्रकाशित हुआ।

आप विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न विद्वान हैं। आपने सामाजिक साहित्यिक क्षेत्र में अनेकों कार्य किए हैं। आप एक निर्भीक एवं निष्पक्ष लेखक एवं कुशल शिल्पी हैं। आपके लेख आर्य जगत की पत्र–पत्रिकाओं में छपते थे पर ग्वालियर के ही सुप्रद्धि यशस्वी साहित्यकार श्री शैवाल सत्यार्थी जी के सत् परामर्शानुसार भारतीय संस्कृति के वाहक अन्य पत्र–पत्रिकाओं में लेख प्रेषित करना प्रारम्भ किया। विश्व हिन्दू परिषद का जानकीपुरम, अयोध्या से प्रकाशित साप्ताहिक 'अयोध्या संवाद' में अब तक–योगेश्वर कृष्ण, भारतीय संस्कृति पर सुनामी आक्रमण, भारत गल रहा है, माम विवस्त्रा कुरुमा, कर्म फल सिद्धान्त आदि प्रकाशित हो चुके हैं।

आपने जिस प्रकार अपना सम्पूर्ण पारिवारिक जीवन ऋषि दयानन्द के मिशन की सेवा करने के लिए समर्पित कर रखा है। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अपनी लेखनी और वाणी से अद्या वधि आप सेवा कर रहे है, आपने कई संगोष्ठी व सम्मेलनों में भाग लिया है। आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु आर्य समाज पूर्ण रुपेण तत्पर है। आज हम आपको अभिनन्दन पत्र व आर्य वैद्धिक विद्वान सम्मान चिन्ह श्रद्धा सहित भेंट कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपको उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करे जिससे अधिकाधिक वैदिक धर्म की सेवा करने में सफल हो सकें।

''हम हैं आपके प्रति श्रद्धावनत''

मिठाईलाल सिंह, प्रधान, अरुण कुमार अबरोल, महामंत्री, राजकुमार भगवती प्रसाद गुप्त, कोषाध्यक्ष

प्रारूप

विश्व की सर्वप्रथम आर्य समाज मुम्बई (काकड़वाडी) के १४२वें स्थापना दिवस–गुड़ी पड़वा वर्ष प्रतिपदा तदनुसार ८ अप्रैल २०१६ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई व आर्य समाज काकड़वाड़ी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में अभिमन्यु कुमार खुल्लर ग्वालियर का सम्मान किया गया। अभिनन्दन ग्रंथ का वाचन प्रतिनिधि सभा के महामंत्री भी अरुण अबरोल ने किया। सभा प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह जी ने मोतियों का कण्ठहार, गायत्री मंत्र अकित अंगवस्त्र शाल एवं २५ हजार की राशि भेंट की। तत्पश्चात् प्रतिनिधि सभा व काकड़वाड़ी आर्य समाज के पदाधिकारियों ने पति–पत्नि दोनों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। लगभग एक हजार वैदिक धर्मविल्मिबियो के समाज श्री खुल्लर ने १५ मिन्ट में ऋषि का गुणगान किया जिसे ओताओं ने सराहा। अन्त में, आचार्य जी ने आभार प्रकट किया एवं श्री खुल्लर के लेखन की भूरि–भूरि प्रंशसा की ओर से खुल्लर जी को बहुत–बहुत बधाई। आर्य वन्दना परिवार की ओर से भी खुल्लर जी को हार्दिक बधाई।

प्रिय ऋषि के दया उदारता, साहसी, संस्करण

♦आचार्य महावीर सिंह, दयानन्द मठ चम्बा

पूज्य स्वामी जी महाराज ने जिस ध्येय व उद्देश्य के लिए ऋषि की आत्मा का आवाहन किया था, ईश्वर से उसे मांगा था और जिस संस्कारों से उसे संस्कारित करने में पूज्य चरण लगे थे। बचपन से ही उन संस्कारो की अभिव्यक्ति, कार्य, रुप में परिणीति, समय–समय पर उसमें दिखाई देती रही। त्याग, उदारता, दया और दूसरों के लिए मर मिटने की प्रवृति निश्च्छल प्रेम, समर्पण यह सब उसके कार्यों से झलकते रहे। वह जितना समय जियां उतने समय तक उसने सभी के दिलों पर राज किया, और गया तो एक अमिट छाप छोड़ कर गया।

यह बात आज से तीस वर्ष पूर्व की है। ऋषि उस समय चार वर्ष का था। वह बाल क्रीड़ाओं में मग्न हो अपने सखाओ के साथ मठ के गेट से बाहर निकल कर मठ की सीमा से लगती भरमौर की ओर जाने वाली पुरानी सड़क पर निकल गया, सहसा ही रास्ते में पड़ी किसी के प्रमादवश गिरी, गोलाकार में लिपटी कुछ राशी पर उसकी नज़र पड़ी। उसने इधर–उधर देखा किसी को न पाकर वह उस राशि को लेकर हमारे पास आया। हमने कहा कि स्वामी जी के पास इस राशि को लेकर जाओ, वह गया अपनी सरल स्वभाव व तोतली भाषा में उसने उस राशि की प्राप्ती की कथा सुनाई। स्वामी जी ने भी हमें बुलाकर आदेश दिया कि पता करो यह पैसे किसके हैं। आस–पास पूछताछ करने पर भी जब उस व्यक्ति का जिसके यह पैसे गिरे थे नहीं पता चला। सप्ताह भर प्रतीक्षा करने पर भी जब कोई इस राशी का अन्वेषक नहीं आया तो पूज्य स्वामी जी ने उस राशी की यज्ञ सामग्री मंगा प्रिय ऋषि के हाथों से यज्ञ में आहुतियां समर्पित कराई। उस राशी को यज्ञ का भाग बना दिया। इस घटना ने मुझे अतीत की अपने साथ घटी घटनाओं के भ्रमर जाल में ला पटक दिया। मैं दीनानगर में पढता था। पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी, जो कि उस समय गोपाल जी के नाम से विख्यात थे, इस नाम से जाने जाते थें। उन्हें फार्मेसी का उत्तरदायित्व गुरु चरणों ने (पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी ने) सौप रखा था। मैं उस समय १५ वर्ष का था। दीनानगर में झंगी नाम ग्राम में मठ की जमीन हैं, वहां स्वामी जी ने मुझे कार्यवश भेजा था। मैं साईकल लेकर गया, वापसी में सड़क पर ज्यूंही में साईकल पर बैठने लगा सामने नज़र पड़ी १०–१० रुपयों की एक पोटली दिखाई दी। इधर–उधर नज़र दौड़ाई तो सामने शहर की ओर जाते एक साईकल सवार को देखा, जो मेरे से काफी दूर था। सोचा उसी के यह पैसे हैं, जो प्रमादवश गिर पड़े हैं। आवाज उस तक पहुंच नहीं सकती थी। अतः तुरन्त साईकल पर बैठा और तेजी से साईकल दौड़ाता उसके पीछे चल पड़ा। वह भी तेजी में था। मुख्य सड़क पर पहुंचते ही ट्रकों का काफिला आया, जिनके कारण मेरी गति मन्द हो गयी और वह साईकल सवार सरपट दौड़ता हुआ मेरी नज़रो से ओझल हो गया। कहां गया पता नहीं चल पाया। मैं मठ तक पहुंच चुका था। अतः फार्मेसी में गोपाल जी के पास पहुंचा क्योंकि वे ही मेरे उस समय भी सब कुछ थे। उन्हें सारी कहानी बताई, और वे मुझे लेकर सीधे गुरु चरणों के पास जिन्हें बड़े स्वामी के नाम से सब जानते व पुकारते थे–ले गए। स्वामी जी के पास इस घटनाक्रम को दोहराया। स्वामी जी ने कहा गिनो कितने रुपये हैं, अब तक हमने वे रुपये गिनू भी नहीं थें। गिने तो दो सौ पचास निकले। स्वामी जी ने कहा अपने पास ही रहने दो। श्री गोपाल जी ने स्वामी जी से कहा स्वामी जी क्यों न इसका घृत लेकर यज्ञ किया जाए। मेरी दृष्टि में यही इस राशी का सर्वोत्तम उपयोग हैं। पूज्य चरण इस बात से बहुत खुश हुए। उन्होंने मेरी पीठ पर भी थापी दी। और यह राशी हमने यज्ञ को समर्पित कर दी। इतिहास प्रिय ऋषि के साथ पुनः दोहराया गया था।

साहसी प्रवृति : मेरा जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ। मेरा गांव भी क्षत्रिय बाहुल्य ग्राम है। ग्राम ही का सारा इलाका ही क्षत्रिय बाहुल्य इलाका है। किसी ग्राम में दो चार परिवार हरिजनों के हैं, जिन्हें हम डूम व दास के नाम जानते व पुकारते थे। दो–दो, चार–चार परिवार ब्राहमणों के हैं। किसी गांव में तो इन जातियों का सर्वथा अभाव हैं, इलाके के अधिकांश लोग फौज में थे और अब भी हैं। हम भी चार भाई हैं। तीन फौज में चले गए। मेरी दिलीय इच्छा फौज में जाने की थी, पर समय की लहरें मेरे को इस ओर धकेलती चली गयी। जिसके विषय में स्वप्न में भी मैंने नहीं सोचा था। धीरे–धीरे समय मुझे अंजान दिशा की ओर लिए जा रहा था। मेरी मंजिल मुझसे दूर होती जा रही थी। फिर भी आशा भरी नजरों से मुड़–मुड़ कर उसकी ओर निगाहें लगाए रखता रहा। मन में आता शास्त्री करने के बाद फिर लाईन पड़ित के रुप में भर्ती हो जाऊंगा। पर ईश्वर को और ही मंजूर था। निश्छल सरल स्वभाव वाले पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी थे। जिन्हें मैं गोपाल जी के रुप मे भाई कह कर पुकारता था। बाद में द्वितीय जन्म सुमेधानन्द जी के रुप में जब उनका हुआ तो गुरु रुप में उन्हें देखने लगा था और में भी निश्छल सरल स्वभाव वाला था। बस क्या था– अलकनन्दा जिस प्रकार भगीरथी में अपने आपको समर्पित कर देती है और गंगाजल उसे अपना ही रुप दे देती है उसी

प्रकार जब मैंने ओउम् अयंतइध्मात्मा–"कहते हुए अपने जीवन को पूज्य चरणों में समर्पित कर दिया। अग्नि रुप गुरुचरणों ने मुझे अपना रुप देना शूरु कर दिया। क्षत्रीय कुलजात होने से साहसी, कर्मठता, निडरता और जुझारु गुण मेरे में जन्मजात थे, पर दया, उदारता, त्याग व परोपकारी गुण गुरु चरणों से संक्रमित, स्थानान्तरित होते चले गए। महर्षि देव दयानन्द जी ने अपने द्वारा लिखित संस्कार विधि के निषक्रमण संस्कार प्रकरण में मंत्र दिया है–

अंगादंगात् सभ्भवसि ह्रदयाधिजायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम्।।

पिता पुत्र के सिर पर हाथ रख कर कहता है कि–हे पुत्र! तुम मेरे अंग–अंग के सार से पैदा हुए हो, मैंने ह्रदय से तुम्हें जाया है। तुम वह आत्मा हो जिसे में पुत्र नाम दूंगा, पुत्र कहकर पुकारुंगा। हे पुत्र तुम शतवर्षों तक जियो। मंत्र मे स्पष्ट है जो संस्कार, जो वृतियां, जो स्वभाव पिता के हैं वही पुत्र में भी आ जाते हैं। अंग–अंग के सार का वह प्रतिपल है। ह्रदय से उसका संकल्प किया गया है। अतः प्रिय ऋषि में भी वे साहसी, निडरता, जुझारु गुण स्वतः ही आ गए। दया, उदारता, परोपकार आदि गुण पूज्य स्वामी जी के द्वारा दिए संस्कारों से आत्मसात् होते गए। यज्ञादि कर्मो में रुचि बनती गयी। जिस कारण उसका जीवन बार–बार संकटों में भी घिर जाने के बाद भी, पूज्य चरणों की तपश्चर्या, यज्ञ याग के परिणामस्वरुप उन संकटो से वह सुरक्षित निकलता गया। उदाहरणस्वरुप एक दो घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ।

प्रिय ऋषि सात वर्ष का था, बेटी चेतना चार वर्ष की थी। बेटी आरंभ से ही चंचल वृति की रही। एक दिन रावी नदी के बिल्कुल पास बालू नामक स्थान पर पं. श्री अमरनाथ जी का घर है। रविवारीय सत्संग उनके घर पर था। मैं व मेरी पत्नी दोनों बच्चों के साथ सत्संग में शामिल होने गए थे। हम दोनों यज्ञ में बैठ गए। दोनों बच्चे अन्य बच्चों के साथ खेलने लगे खेलते–खेलते रावी के तट पर पहुंच गए। प्रिय ऋषि ने अपनी बहिन को एक बड़े से पत्थर पर बिठा दिया। स्वयं बच्चों के साथ रावी के रेतीले तट पर खेलने लगा। इस बीच उस पत्थर के पास से रावी का पानी घूम कर आगे मुख्य धारा में मिल कर द्रुतगति से बह रहा था। पत्थर के नीचे झील सी भी बन गई थी जिसके अन्दर रेत थी। हमारी बेटी कब खिसक कर उसमें जा गिरी किसी को पता नही चल पाया। गिरते ही जब डूबने लगी तो उसने जोर से आवाज दी भाई बचाओ वह रेत में धसती जा रही थी। मुंह तक पानी आ गया उसने हाथ खड़े कर रखे थे। बच्चों ने यह दृश्य देखा तो सभी बच्चे भाग गए। जिनमें से कुछ बच्चे १४,१५ साल के भी थे। किसी ने भी हमारी बिटियां को बचाने का प्रयास भी नही किया। अब वहां ऋषि अकेला था, ऋषि ने ऑव देखा न तॉव सफेद कुर्ता पजामा उसने पहन रखा था। वैसे ही बहिन को बचाने पानी में चला गया। किसी तरह बहिन का हाथ उसने पकड़ा और उसे बाहर निकाला। कैसे निकाला यह भगवान ही जानता है। अथवा पूज्य स्वामी जी की साधना, दीर्घकालिन यज्ञों से सन्तुष्ट देव व पितृजन ही जानते हैं। अन्यथा रावी नदी में गिरने के बाद आज तक कोई बाहर नही निकला। गणतन्त्र दिवस पर साहसी बच्चों को पुरस्कृत व सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार उसे भी मिला तब जब वह रेत में सिर से पांव तक सने गीले कपड़ो के साथ ठीक वैसी ही अपनी बहिन का हाथ पकड़े हमारे सामने आ खड़ा हो गया। संभवतः उसे आशा थी कि माँ से शाबाशी मिलेगी, पर यह क्या माँ ने उसके गालों पर दो थप्पड़ जड़ दिए यह पुरस्कार उसे मिला। बाद में माँ ने रोते हुए भले ही गले लगा लिया था।

प्रिय ऋषि मैट्रिक करने के बाद संस्कृत विद्यालय में प्रवेश ले चुके थे। संभवतः शास्त्री प्रथम वर्ष की यह घटना है। गर्मियों के दिन थे। ऋषि को उसके सहपाठी मठ के पास मिंजरी गार्डन हैं, वहाँ ले गए घूमने की दृष्टि से गए थे। वहां रावी में नहाने का उनका मन बन गया । मिंजर मेले के समय जिस स्थान पर मिंजर बहाई जाती है वहां पर पानी गहरा है, पानी का प्रवाह चट्टान के अन्दर से घूम कर बाहर को आता है। छात्र अभी नहाने की तैयारी कर रहे थे। उनमे से एक ने गहरे पानी में छलांग लगा दी। पानी का प्रवाह उसे चट्टान के अन्दर धकेलने लगा उसने भी जोर से आवाज दी ऋषि भाई बचाओ, ऋषि ने बिना सोचे समझे पानी में छलांग लगा दी अपने साथी को तो उसने किसी तरह उठा बाहर फेंक दिया, पर वह स्वयं भंवर में फंस गया। पानी उसे चट्टान के अन्दर धकेलने लगा। थोडा बहुत तैराक होने के कारण उसने हाथ पांव मारे किसी तरह बाहर आ गया। जहां बड़े–बड़े तैराक भी फेल हो जाते हैं। जिस प्रवाह में जाने का कोई भी साहस नहीं कर सकता। पहाड़ो से नदी के प्रवाह के साथ बहकर आने वाले बड़े–बड़े लकड़ी के ढेले भी हमने अन्दर समाते देखे हैं। वहां से प्रिय ऋषि अपने सहपाठी को बचाकर स्वयं भी सकुशल बाहर आ गया। पूज्य स्वामी जी महाराज के द्वारा किए जा रहे बड़े–बड़े दीर्घसत्रीय यज्ञों का यह चमत्कार था। उन यज्ञों से तृप्त व सन्तुष्ट देव व पितृजनों द्वारा किए गए सुरक्षा कवच का यह प्रतिफल था। जीवन में मेरे परिवार के साथ बड़ी–बड़ी दुर्घनाए घटित हुयी। जहां से हम सुरक्षित निकले। इन सबका जब कभी यज्ञों के चमत्कार के विषय में लिखूंगा तब उल्लेख करुंगा। बेटे के साहसिक कार्यों का उल्लेख पुस्तक के रुप में

करुंगा। अभी तो यह उसकी स्मृति में लेख लिख रहा हूँ। दया उदारता : यह गुण उसमें कूट–कूट कर भरे थे। पूज्य स्वामी जी का हमें आदेश भी था, मांगने वाले आते हैं जो भी चीज देनी हो बच्चों के हाथ से दिलाओ। पहले स्वामी जी हमारे हाथों से दिलाते थे। फिर बच्चे हो गए उनके हाथ से दिलाने लगे। इससे बच्चों की देने की वृति, देने के संस्कार उनके बनते हैं। इन्हीं संस्कारों के परिणामस्वरुप हमारे बच्चे कभी देने के मामले में पीछे नही रहे। साधु, महात्मा व गरीब याचक जब मठ में आते रहते हैं और वस्त्र, कम्बल व अन्य जरुरत की चीजें लेकर जाते है। एक बार हम घर पर नही थे बेटी छोटी थी एक महात्मा जी आए कहने लगे बेटी कम्बल चाहिए, बेटी अन्दर गयी और एक सुन्दर सा कम्बल भेड़ों के ऊन से बना दुहरा कम्बल जो हमने सुदूर गांव से बनवाकर अपने प्रयोग के लिए खरीदा था। वह बेटी ने उस साधु को लाकर दे दिया। वह साधु हड़बड़ा भी गया ले लूं या न लूं। इसी ऊहापोह मे बैठा था कि हम भी इस बीच मे आ गए। वह घबराया, मेरी पत्नी ने कहा बाबा जी घबराओ नही बेटी ने दे दिया तो अब ले जाओ। प्रिय ऋषि भी इन बातों में उदार था। साथ मे पढने वाले छात्रों की कपड़ो से, पैसों से, कौपी किताबों के द्वारा सहायता करता रहता। कभी जब उसके लिए कपड़े बनाने लगते तो वह स्वामी जी से अथवा हमसे कहता स्वामी जी, माता जी उसके पास कपड़े नही पहले उसके लिए बना दो। शादी के समय भी अपने सामर्थ्यहीन साथियों के लिए सर्वथा अपने अनुकूल कपड़े लेकर कोट–पैन्ट पूरी ड्रेस सिला कर दी। यही कारण है कि उसकी मित्र मण्ड़ली आज जब भी उसे याद करती हैं तो सबकी आंखें नम हो जाती हैं।

प्रेरक प्रसंग

मोमबत्ती और अगरबत्ती दो बहनें थीं। दोनों एक मन्दिर में रहती थीं। बड़ी बहन मोमबत्ती हर बात पर अपने को गुणवान और अपने फैलते प्रकाश के प्रभाव में सदा अपने को ज्ञानवान समझकर छोटी बहन को नीचा दिखाने का प्रयास करती थीं। अगरबत्ती सदा मुस्कुराती रहती थी। उस दिन भी हमेशा की तरह पुजारी आया, दोनों को जलाया और किसी कार्यवश मन्दिर से बाहर चला गया। तभी हवा का एक तेज झोंका आया और मोमबत्ती बुझ गई यह देख अगरबत्ती ने नम्रता से अपना मुख खोला, बहन हवा के एक हल्के झोंके ने तुम्हारे प्रकाश को समेट दिया, परन्तु इस हवा के झोके ने मेरी सुगंध को चारों ओर बिखेर दिया। यह सुनकर मोमबत्ती को अपने अहंकार पर शर्मिंदगी हुई।

क्या मांगू ?

♦रोशन लाल बहल, मुख्य संरक्षक, आ. प्र. सभा (हि.प्र.)

महाभारत के युद्ध की समाप्ति के उपरान्त जब श्री कृष्ण द्वारका जाने हेतु प्रस्थान करने लगे तो उन्होंने कुन्ती के भवन में जाकर हाथ जोड़कर कहा बुआ अब मैं द्वारका प्रस्थान कर रहा हूँ कुछ मांगना चाहती हो तो मांगो। श्री कृष्ण की बात को सुनकर कुंती बोली–माधव अगर मुझे देना ही चाहते हो तो मेरी इच्छा है कि मेरे बेटों पर बार–बार विपत्ति के बादल मंडराते रहे। कुंती की इस बात को सुनकर योगेश्वर श्री कृष्ण हैरान हो गए और कहने लगे बुआ अभी–अभी महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ है और अंसख्ये शवों को पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े चुन–चुन कर नोच रहे हैं, उधर तुम है जो मुझसे ऐसी बात कह रही हो। मैं जानना चाहता हूँ आखिर आपने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों ? कुंती बोली माधव जब मेरे बेटों के उपर विपति की घटा के बादल छाए रहेगें तो वे अशांत होकर उनको दूर करने का प्रयत्न भी करेगें। उसी बीच मुरली की ध्वनि भी गूंजती हुई सुनाई देगी। शान्ति का राज्य स्थापित करने के लिए अवश्यक है कि मेरे पुत्र संघर्षो के साथ आयु पर्यन्त दो–दो हाथ करते रहे। और अपनी जीवन को सुखी सुन्दर और आनन्दमय बनाए तथा उन्हें हमारा मार्गदर्शन भी सदा सर्वदा मिलता रहे। मुझ जैसे व्यक्ति को यदि उस निंरकार ज्योति से कुछ याचना करनी हो तो मैं मानवता के कल्याण की बात चरणों में उनके करूंगा। प्रभु जी कहुंगा कि मेरे देश में ही नहीं अपितु विश्व में शान्ति का सम्राज्य हो और चारों ओर वेद मंत्रों की ध्वनि सुनाई देती रहे। मैं प्रभु के श्री चरणों में गिड़गिड़ाता हुआ। उनसे प्रार्थना करूंगा कि मैं जीवन पर्यन्त नेक शुभ व कल्याणकारी कार्य करूं। कभी भी व किसी परिस्थिति में दूसरे के पाप, ताप संताप हरने से दूर न भागु। दीन–दुखियों व दलित जनता के आंसुओं को धोता रहूँ और जब तक जीवन में सांस है तब तक आखिरी सांस तक सुकृत्यों के बीज पृथ्वी पर बोता रहूँ और प्राणी मात्र के कल्याण के लिए आपकी शक्ति व आशीर्वाद मुझे मिलता है, रहे ताकि मैं शुभ नेक व कल्याणकारी कार्य करता हुआ प्रत्येक के बीज को सुखमय बनाऊँ।

।। ओ३म् ।।

ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जिससे सुख प्राप्त होगा ही, कष्ट आवेंगे ही नहीं। –स्वामी दयानन्द

अभिवादन

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

अभिवादन शिष्टाचार का अनिवार्य अंग है। मिलते तथा विछुड़ते समय हम एक दूसरे का अभिवादन करते तथा शुभ कामनायें देते हैं। अभिवादन का ढंग देश, धर्म काल तथा समाज अनुसार बदल जाता है। ध्रुवों में रहने वाले एस्किमों मिलने पर अपनी नाक सामने वाली की नाक से रगड़ते हैं। वहाँ सारा स्थान हिम की परत से ढका होता है। उनके घर जिन्हें इग्लू कहते हैं, भी हिम से ही बने होते हैं। जेब या कपड़ों से हाथ बाहर निकालना कठिन होता है। प्राचीन राजाओं को देव तुल्य मानकर झुक कर दाहिने हाथ से अभिवादन करते थे। अभिवादन कर्ता का सिर ढका हुआ और पांव नंगे होते थे और मुख से जय देवा कहा जाता था। मुगल सम्राटों का भी अभिवादन इसी प्रकार किया जाता था परन्तु मुख से ऐसे वाक्य निकलते थे 'आप का अकबाल बुलद हो' आदि। मुस्लमान 'सलामा अलेकम' कहते हैं और सलाम करते हैं। सैनिक सेल्यूट करते हैं। सिख 'सत् श्री अकाल' कहते हैं। पश्चिमी देशों में हाथ मिलाकर शुभ कामना करते हैं। कई मुस्कान के साथ हाई कह आगे बढ़ जाते हैं। घनिष्ठ मित्र फिस्ट बंप द्वारा अभिवादन करते हैं। फिस्ट बंप का अर्थ है मुक्कों का टकराना। आधुनिक स्त्रियां मुस्कराहट के साथ सिर थोड़ा सा नीचे की ओर हिलाकर अभिवादन करती हैं। हिन्दु समाज में नमस्ते, साषृांग प्रणाम या पांव छुकर अभिवादन करते हैं। विभिन्न साम्प्रदाय से सम्बंधित अपने इष्ट का नाम लेकर अभिवादन करते हैं, जैसे वैष्णन जय सिया राम या राम–राम कहकर अभिवादन करते हैं। राधा स्वामि–साम्प्रदाय के लोग राधा–स्वामी शब्द से ही अभिवादन करते हैं। विभिन्न आंचलों में मुख के बोल भले ही बदल जायें परन्तु भारत में अभिवादन का रूप एक समान ही है।

अभिवादन का सबसे लोक प्रिय प्रचलन नमस्ते है। इससे दूसरे के प्रति आत्मीयता का भाव उत्पन्न होता है। नमस्ते शब्द नम्रता तथा कृतज्ञता का भाव जागृत करता है। नमस्कार मुद्रा में खड़े होकर नमस्ते की जाती है जिसमें सिर थोड़ा झुका हुआ, छाती के मध्य भाग में दोनों हथेलियाँ जोड़कर और उंगलियों को आकाश की ओर रखते हैं। यह अध्यात्मिक दृष्टि से भी एक महत्वशाली मुद्रा है। जो भक्ति भाव दर्शाती है तथा ध्यान के लिये उत्तम मुद्रा मानी जाती है। इससे आदर भाव भी उत्पन्न होता है। नमस्ते संस्कृत का शब्द है। जो नम् धातु से बना है। जिसका अर्थ है नमन करना अर्थात् मैं आप के आगे झुकता हूँ इस प्रकार मिलने वाले की श्रेष्ठता को मान्यता मिलती है। नमस्ते स्वास्थ्य की दृष्टि से अति उत्तम है। इससे मिलने वालों को छूने से बचते हैं। जिससे संक्र रोगी के सम्पर्क में नहीं आते। डॉक्टरों में नमस्ते का चलन बढ़ रहा है। उनके अनुसार एक डॉक्टर दिनभर रोगियों से घिरा रहता है। उनसे हाथ मिलाकर वे सक्रंमण रोगों के कीटाणुओं को अन्य रोगियों या स्वस्थ लोगों तक पहुंचाने का कारण बन सकते हैं। महर्षि दयानंद ने भी अभिवादन के लिये नमस्ते का ही समर्थन किया है। नमस्ते कहिये, प्रिय बनिये, स्वस्थ रहिये तथा प्रसन्न रहिये।

कब कोई चूहा हमें जगायेगा

♦डॉ. श्री गोपाल बाहेती, अजमेर

आजादी के प्रथम स्वप्न दृष्टा आर्य समाज के संस्थापक, युग पुरूष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण १८८३ की दीपावली को हुआ। जिस महापुरूष ने अपना सम्पूर्ण जीवन और जीवन की प्रत्येक श्वांस जन कल्याण में लगा दी उनका जीवन हमारी, समाज व राष्ट्र की दशा नहीं सुधार सका तो फिर कौन आयेगा इस देश की दशा–दिशा सुधारने, कौन आयेगा आर्यों को अपना कर्तव्य बोध कराने।

हम प्रतिवर्ष स्वामीजी का जन्म दिन, बोध दिवस, निर्वाण दिवस आदि बड़े उत्साह से मनाते हैं पर हमारे उत्सवों में क्या हमें कभी उमंग भी दिखती है ? क्या कभी लगता है कि ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये हम कुछ कर रहे है ? आगे बढ़ रहे हैं।

समाज में बढ़ रहा अंध विश्वास व मत मतान्तर क्या कभी हमें झकझोरता है कि स्वामी ने सत्यार्थ प्रकाश क्यों लिखी ? क्या हम इस सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ तदनुकूल आचरण कर रहे हैं ? अगर नहीं तो कब जागेंगे और कब सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के ज्ञान का समाज में फैलायेंगे या साप्ताहिक सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश की कक्षा कर इति श्री करते रहेंगे।

स्वामीजी को एक चूहे ने बोध करा दिया क्योंकि उनकी अन्तः चेतना जागृत थी पर पता नहीं हम आर्यों को कब बोध होगा ? कब कोई चूहा हमें जगायेगा और कब हम ऋषि के संदेश को, उपदेश को जन–जन तक पहुंचा समाज व राष्ट्र का भला करेंगे।

आर्य समाज के माध्यम से हम इस देश से अशिक्षा, अस्पृश्यता का नाश करने में लगें तो निश्चय ही भारत एक बार फिर विश्वगुरू बन पूरे विश्व को शांति के मार्ग पर ला सकता है और विश्व से हिंसा, आतंक, भूख, गरीबी व अनाचार को मिटा सकता है। आवश्यकता है :–

आर्यों तुमको तड़फना भी है, तड़फाना भी है।
आग बनना ही नहीं, आग बरसाना भी है।।

आर्य समाज मण्डी का चुनाव

आर्य समाज मण्डी के वार्षिक चुनाव दिनांक २७ मार्च २०१६ को श्री रोशन लाल बैहल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें सर्वसम्मति से श्री देविन्द्र नाथ वैद्य को प्रधान चुना गया तथा कार्यकारिणी व अंतरंग सभा के गठन का अधिकार दिया गया इसी के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यकारिणी व अंतरंग सभा के सदस्यों का गठन किये जाने की घोषणा करता हूँ।

संरक्षक : श्री रोशन लाल बैहल, श्री रत्न लाल वैद्य, श्री किशोरी लाल वैद्य, कार्यकारिणी : श्री देविन्द्र नाथ वैद्य (प्रधान), श्री दीनानाथ वैद्य (वरिष्ठ उप–प्रधान), श्रीमती अनीता लोहिया (उपप्रधान), श्री वेद प्रकाश वैद्य (मंत्री), श्री देव राज आर्य (उप मंत्री), श्री वेद मित्र शर्मा (प्रचार मंत्री), श्री खेम सिंह सेन (कोषाध्यक्ष), श्री भूपिन्द्र पाल लोहिया (लेखा परीक्षक), अंतरंग : श्री अमृत लाल बैहल, श्री हरिश चन्द्र बैहल, श्री सुरेश टण्डन, श्री सुरेश टण्डन, श्री यशपाल गोयल, श्री हर गोपाल कपूर, श्री देवी चन्द कपूर, श्री जगदीश वैद्य, श्री भूपिन्द्र पाल मल्होत्रा, श्री अशोक भारती, श्रीमती विद्यावती वैद्य, श्रीमती राजकुमारी हाण्डा, श्रीमती गोमती लोहिया, श्रीमती सरला बैहल, श्रीमती दयावती बैहल, श्रीमती अरुणा कौशिक, श्रीमती योग माया विष्ट, श्रीमती सरस्वती कपूर।

समाचार

♦गत दिनों में अपनी पाठशाला के सहपाठी के घर उनके आग्रह करने पर परिवार सहित जा धमका। मेरा सहपाठी श्री गर्वधन सिंह जी जिन्हें हम बचपन से मामटी कहकर पुकारते थे हमें देखकर बहुत खुश हुआ इस अवसर पर हमारे बचपन के साथी पं. भास्कर दत शर्मा जी वहाँ पहुंचे थे। मैंने आर्य समाज की ओर से माामटी गर्वधन व उनकी पत्नी को माल्यार्पण करके टोपी पहनाई और ऋषिवर दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश तथा एको एक ओ३म् के मोमेन्टों भेंट किया। श्री गर्वधन जी की धर्मपत्नी ने मुझे ५०० रु. और एक रूमाल दिया। जब मैंने रुपये लेने इसे इंकार किया तो वह बोली आप इन्हें मामटी कहकर पुकारते है। आप इस राशि को लेने से कैसे इंकार कर सकते है। मैंने और कुछ कहे उस राशि को अपनी जेब में डाल दिया। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती महेन्द्री देवी ने श्री गर्वधन ठाकुर जी की पत्नी को माल्यपिक करके सम्मानित किया और उन्हें गृह में आने हेतू आमन्त्रित किया। इस अवसर पर हमारे प्राचीन सहपाठी श्री अमर सिंह सैन व उनकी धर्मपत्नी भी पधारे थे। सभी से मिलकर आनन्द की अनुभूति हुई जिसे शब्दों में वर्णित नही किया जा सकता। मैंने श्री गर्वधन सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी के लम्बे जीवन की प्रभु चरणों में प्रार्थना की और श्री गर्वधन सिंह जी द्वारा आयोजित सुन्दर धाम का आस्वादन किया और घर वापसी पर रास्ते में अपनी पोती सुप्रिया जी के ननिहाल में चाय–पान किया। यह यात्रा हमारे जीवन की सुखद यात्रा थी।

♦चौंसठ वर्षीय श्री परमानन्द चौधरी ने १५०० मीटर की दौड़ में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त करके हि.प्र. के नाम व शान को चार चांद लगाए। छात्र निवासी श्री परमानन्द चौधरी पहले भी दौड़ों में भाग ले चुके है और अपने गांव की ख्याति को चार चांद लगा चुके हैं। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री की ओर से मैडल प्राप्त करने वाले, उन शूरवीरों में जिन्होंने नौकरी के दौरान सेना में रहकर चीन, पाकिस्तान के हुए युद्ध में भाग लेकर एक अनुपम उदाहरण स्थापित किया है। उन पर सभी को गर्व है। आर्य वन्दना परिवार ओर से उन्हें कोटि–कोटि सलाम।

शोक समाचार

♦सुन्दर नगर निवासी मायाधर जी चल बसे। हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ के संस्थापक सदस्य कर्मठ कार्यकर्ता जुझारन नेता ८० वर्षीय श्री मायाधर शर्मा सदा के लिए अपनी ऐहिक लीला समाप्त करके परमेश्वर की व्यवस्था में समा गये। वे समझदार व्यक्ति थे। इनके निधन से पैंशनर समाज में विशेष कमी आई है जिसकी क्षतिपूर्ति कठिन ही नहीं अपितु अंसभव भी है। श्री मायाधर शर्मा गत लम्बे समय से रोग्रस्त थे। १४ मई शनिवार को उनका देहावसान हो गया। आर्य वन्दना परिवार के मुख्य प्रबन्ध सम्पादक विनोद स्वरूप तथा सम्पादक कृष्ण चन्द आर्य, प्रबन्ध सम्पादक माया राम ने शर्मा जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया तथा उनको दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उनके परिजनों को इस दुःख की घड़ी में परमात्मा साहस प्रदान करे।

♦७६ वर्षीय श्री कृष्ण देव साहनी का गत सप्ताह निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री के.सी. आर्य ने सम्पन्न करवाया। श्री कृष्ण देव साहनी, ईमानदार, मधुरभाषी एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आर्य वन्दना परिवार उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। ईश्वर उनके परिवार को इस दारूण दुःख की घड़ी में धैर्य और साहस प्रदान करे। कृष्ण देव के सुपुत्र पंकज साहनी ने ११००/–रु की राशि आर्य समाज खरीहड़ी को दान स्वरूप भेंट की। आर्य वन्दना परिवार उक्त दोनों दिवंगतों की आत्मिक शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

–माया राम वर्मा, प्रबन्ध सम्पादक

दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती-कौन ?

♦सत्यपाल आर्य, हिसार

आर्य जाति का ऐसा कौन हतभाग्य मनुष्य होगा, जो यह न जानता हो, कि दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती कौन थे ? यह प्रश्न बहुत ही वामन प्रश्न प्रतीत होता है, परन्तु इसका उत्तर सुदीर्घ एवं विशाल तथा महत्त्वपूर्ण है।

दण्डी स्वामी एक अद्‌भुत प्रतिभा सम्पन्न, विलक्षण महापुरुष थे, जिन्होंने भारत की हजारों वर्ष पुरानी आर्ष पद्धति का पुनरुद्धार किया। इस युगपुरुष ने ईश्वरभक्ति, घोर–तपस्या और ब्रह्मचर्य की साधना से उपार्जित अपरिमित स्मरण शक्ति एवं मेधा से अज्ञान, आलस्य प्रमाद व स्वार्थ से मेघाछन्न व्याकरण सूर्य को पुनः प्रकट किया।

स्वामी विरजानन्द ने इस म्रियमाण आर्यजाति, धर्म, संस्कृति, सभ्यता को, मोहग्रस्त मानवता को, पाखण्ड, रूढिवाद एवं अज्ञान से त्रस्त भारती को नवजीवन प्रदान किया। अपनी अस्मिता व पहचान खो चुके देशवासियों को आर्ष व अनार्ष ग्रन्थों का भेद बताया। वेदार्थ एवं वेदाध्ययन की कुञ्जी पाणिनिकृत अष्टाध्यायी व महाभाष्य प्रदान की। संस्कृत अध्ययन का आधार निरुक्त एवं निघण्टु को बताया। वेदार्थ को रूढ़ता से मुक्त किया। ब्रह्मा जैमिनी मुनि पर्यन्तों को मन्तव्यों को प्रकाशित करने वाले आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्माण करके समाज, धर्म व जाति को समर्पित किया।

वह माता–पिता व आचार्य धन्य–धन्य व कृतकृत्य हो जाते हैं, उनका जीवन सफल व सुफल हो जाता है, जिनकी पहचान उनकी संतान व शिष्य/शिष्यों की सुकीर्ति से होने लगती है।

एक सरल, सहज व स्वाभाविक प्रश्न का उत्तर समाज जानता, मानता व पहचानता है कि स्वामी दण्डी विरजानन्द सरस्वती, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु थे। स्वामी दयानन्द ने वेदभाष्य आदि समस्त ग्रंथों में अपनी पहचान व परिचय परम विद्वान दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के शिष्य के रूप में दी है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती, दण्डी स्वामी का मानस पुत्र है। दयानन्द के मन्तव्यों, सिद्धांतों, वक्तृत्व, कर्तृत्व व लेखन पर सर्वत्र दण्डी स्वामी की मुद्रा अंकित है। दयानन्द की प्रत्येक विजय दण्डी स्वामी की विजय पताका है। दयानन्द की धवलकीर्ति में दण्डी स्वामी का अस्तित्व दृश्यमान है।

दयानन्द सरस्वती के हर अभियान एवं संघर्ष में, शास्त्रार्थ में विरजानन्द स्वामी का अस्तित्व दिखाई देता है। यदि दयानन्द 'एक' था तो उसे ग्यारह बनाने वाला था दण्डी स्वामी। दण्डी स्वामी व दयानन्द एक दूसरे से अभिभाज्य है। वे एक–एक ग्यारह न होकर १११ हैं। वे दो दयानन्द और दो विरजानन्द हैं।

यदि दयानन्द महामानव है तो दण्डी स्वामी उस महामानव का रचनाकार, पथ प्रदर्शक व निर्माता है। समय आने पर जिस दयानन्द के समक्ष सभी दण्डित आचार्य, गुरु, वैयाकरण यति, मौलवी, पादरी, आस्तिक, नास्तिक एवं सभी संशयवादी–चिन्तक निस्तेज व निष्प्रभ सिद्ध हुए :–

उस दयानन्द की प्रतिभा जिस प्रतिभा के सामने हतप्रभ हुई थी, उसके पाण्डित्य ने जिसके पाण्डित्य का लोहा माना था, उसकी विचार शक्ति ने जिस विचार शक्ति का अनुसरण व अनुकरण किया था–वह था दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती।

यद्यपि ऋषि दयानन्द में आरम्भ से ही महत्ता के सभी अंकुर विद्यमान थे तथापि उसके प्रारोहण में जितनी सहायता उनको विरजानन्द सरस्वती के गुरुरूप में मिली, उतनी अन्यत्र कहीं से प्राप्त नहीं हुई। गुरुवर की मृत्यु पर स्वामी दयानन्द ने सहज ही स्वीकार किया था "हा। आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।"

स्वामी दयानन्द के हृदय को बचपन से ही शंकाओं ने विक्षिप्त कर दिया था और उन्हीं शंकाओं से प्रेरित होकर वे सत्य की खोज में निकल पड़े थे। उनके समाधान की सामग्री एक मात्र गुरु विरजानन्द सरस्वती ही थे। उनके एक सूत्र अर्थात् "ऋषि प्रणीत ग्रंथों को पढ़ो, मनुष्य कृत ग्रंथों को त्याग दो।" ने साधारण काषाय वस्त्रधारी संन्यासी दयानन्द को ऋषि दयानन्द बनने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

इस प्रशस्त पुण्य आत्मा का निर्माता, रचनाकार, पथप्रदर्शक व गुरु था विमल कीर्ति, व्याकरण सूर्य दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती।

बस दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती का परिचय व पहचान केवल दयानन्द है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2018

सेवा में

बुक पोस्ट

आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर कालौनी में

वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रचार आयोजन

दिनांक 28 जुलाई 2016 से 31 जुलाई 2016 तक

न कि देवा इनीमसि नक्या योपयामसि मन्त्र श्रुत्यञ्चरामसि (साम. १.७६)
न तो हम किसी की हिंसा करते हैं, न ही घात–पात करते हैं और न ही फूट डालते हैं
वरन् हम तो मन्त्र को सुनकर तद्नुसार श्रेष्ठ आचरण करते हैं।"

मान्यवर!

आपको सूचित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी (हि.प्र) में वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में वेद–प्रचार का आयोजन दिनांक 28 जुलाई 2016 से 31 जुलाई 2016 तक बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री राम निवास जी की भजन मण्डली (हरियाणा) से पधार रहे हैं। सत्य धर्म क्या है, सच्चे ईश्वर की उपासना कैसे हो, हम किस प्रकार सुख एवं शान्ति प्राप्त करें आदि विषयों पर इन विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान सुनने को मिलेगें। अतः आप से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः" (यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है) अतः इस अवसर पर विश्वशान्ति के निमित्त विशेष यज्ञ किया जायेगा। इसमें चतुर्वेद शतक के मन्त्रों से आहुतियां दी जायेंगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामफल सिंह आर्य (महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. एवं प्रधान आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी) होंगे। अतः अधिक से अधिक संख्या में यजमान बनकर पुण्य लाभ करें। यजमान बनने वाले सज्जन अपना नाम मन्त्री आर्य समाज कालौनी को देने का कष्ट करें। श्री स्वामी सुखानन्द जी एक सिद्धहस्त कुशल वैद्य हैं अतः उपरोक्त तिथियों में निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध रहेगी। रोगी जन आर्य समाज में आकर चिकित्सा लाभ उठा सकते हैं।

कार्यक्रम

वीरवार, 28 जुलाई से शनिवार 30 जुलाई 2016 तक

यज्ञः	---	प्रातः 6.30 से 7.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचनः	---	प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक
		रात्रि 8.00 से 10.00 बजे तक (प्रतिदिन)

रविवार, 31 जुलाई 2016

यज्ञ एवं पूर्णाहुति	---	प्रातः 8.00 से 10.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचनः	---	प्रातः 10.00 से 12.30 बजे तक

निवेदक : प्रधान / मन्त्री एवं समस्त कार्यकारिणी, आर्य समाज, सुन्दरनगर, कालौनी

साभार

श्री यशोमति आनंद, गांव नलसर, डा. बग्गी (राजगढ़), तह. बल्ह (नेरचौक), जिला मण्डी ने ₹२०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।